"Told in desperate **voices**, when it becomes a Question of Survival"

Creating theatre is a continuous confrontation of the artistes with themself, their mythology and their socio-cultural ambience. There are theatre artistes, who never made popular choices, and took difficult paths not knowing where they would lead. Art- like science- searches to discover unknown territories. It strives, uncertain results but with rigorous self – discipline, to transgress any defined borders. All great artistes may refuse to accept any responsibility of **morality** that society wishes to impose on them. Yet the best of them know that if they abuse this hard–won freedom, it can only lead to bad art. If they are not believers of God then it is at its best, it's an exquisite bond between the artistes and the medium. At its worst it's a relationship of disrespect and exploitation. If artistes are believers of the God then the art and its creators are the ones who usually explore the forgotten adventures of the Gods. That's why the imagined character of Amitabh Kulasheshtra and Sreemoyee's fictional take on Indian theatre becomes relevant to us.

What grabs my attention towards this novel "Cut" is that - it presents a posthumous look at the personal and professional life of a visionary theatre artist, Amitabh Kulasheshtra, the turmoil of his life and the price he paid to get his voice heard. How Amitabh had grappled with a gnawing hollowness – a mounting disbelief in basic human goodness, transparency, and the **legal system** of this country; qualities and institutions that he had sworn by all his life. The thought that thrive shallow caste and communal politics, which he had fought against and discarded all his life, now chased him everywhere he went. Above all, this book to a great extent explores the **interpersonal relationships** between Amitabh and his co-artists and family members.

Devising as we understand, is a process in which students, along with a group of creative individuals, come together to develop a performance collaboratively. It starts from scratch and one can never tell what the end result might look like. We introduced the text of 'CUT' to the students in small units of reading materials without revealing the whole narrative and Sreemoyee's name. In the process, the students explored the text without having any baggage. However, at the end of first part of the process, we distributed the book "CUT" to the students. We choose a bunch of improvisations and woven them in a way that they produce a visual treat for the audience. There are many challenges and risks in doing so: there may not be a linear story line; it may become a collage of visuals by itself; we ourselves could not at once see a direct politics in what we were making. Although I understand, where there is collective action, there is always a collective politics too. Here, by 'collective action', I refer to the actions performed together by a group of artists whose collective goal is to enhance their understanding and to achieve a common objective. As the novel is based on the anecdotes of theatre and films, explored through the relationships and individualities of characters working within these most concerted fields, the politics of the relationships and individuals forms the very core of this production.

While devising the play, we kept in mind that all the exercises and improvisations should have a digital intervention or interface. This intervention is made use of to give an **immersive** language into the performance making and also to explore how time and space is getting challenged in theatre. **Digital** theatre design and **performance** open up a chance for the spectator to come into contact with the artists and even participate in the creation.

We wanted to take the challenge of the physical absence of Amitabh Kulasheshtra on stage, the main protagonist of the novel. So that this could be any theatre artist of this country who voices against the existing system. We have also tried casting two sets of actors in the same roles one before the death of Amitabh and the other set of actors perform the same characters after the death of Amitabh. We have made this choice because this book travels through memories and thoughts of different characters, which Sreemoyee has beautifully penned in her novel "CUT". Our student performers have explored these characters with different personality traits.

I have to have a special mention of Harish Khanna. How much ever he is busy in Mumbai has always found out time even by canceling some of his shootings from the main stream Bollywood movies for having those passionate interaction with the young students and also helping in the play direction / devising from the very beginning on every detail which goes into the making of the production. Thanks Harish for your long standing commitment and sincerity towards theatre and creations. I am equally grateful to Aditee Biswas for her meaningful advises and guidance. I am obliged to Himanshu B Joshi and Vishal Ramachandra Mahale who constantly worked towards developing a structure for stage adaption of the novel. I really appreciate young vibrant upcoming play director Sourav Poddar's contribution to this production with his never ending imaginative ideas. Last but not the least, I am grateful to my dearest and hard working students of third year without whom this project must have never happened.

A DIGITAL DEVISED PERFORMANCE

BLINDSIDE

Based on Novel 'Cut' by Sreemoyee Piu Kundu

Directed by Abhilash Pillai

रंगमंच प्रस्तुत करने के एक तरह से कलाकारों का खुद से, अपने मिथकों और अपने सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश से निरंतर टकराव है। हमारे यहाँ कई रंगकर्मी हैं, जिन्होंने कभी लोकप्रिय होने का विकल्प नहीं चुना और हमेशा कठिनाई भरे रास्तों पर चले, यह जाने बिना कि यह रास्ते उन्हें कहाँ ले जाएंगे। हम जानते हैं कला विज्ञान की तरह ही अज्ञात इलाकों की खोज करती है। वह एक तरह के कठोर आत्म–अनुशासन के साथ अनिश्चित परिणाम पाने के लिए परिभाषित सीमाओं का उल्लंघन करने का प्रयास भी करती है। जितने भी महान कलाकार हैं समाज द्वारा थोपी जाने वाली नैतिकता की कोई भी जिम्मेवारी लेने से इनकार कर सकते हैं। फिर भी उनमें जो महानतम हैं वो जानते हैं अगर वो इस कड़ी मेहनत से हासिल आज़ादी का दुरुपयोग करेंगे तो केवल बुरी कला का ही जन्म होगा। यदि वो नास्तिक हैं, तो इसमें अच्छी बात यह है कि वह कलाकार और माध्यम के बीच एक गज़बूत बंधन बन जाती है। दूसरी तरफ इसकी खराबी यह है कि यह कभी भी अपमान और शोषण का रिश्ता बन सकती है। और वहीं अगर वो आस्तिक हैं तो कह सकते हैं कला और कलाकार वह हैं जो आमतौर पर देवताओं द्वारा भुला दिये गये कार्यों की पड़ताल करते हैं। इसीलिए यही वजह है कि अमिताभ कुलशेष्ठ का काल्पनिक किरदार और भारतीय रंगमंच पर श्रीमुई का कल्पित लेखन हमारे लिए प्रासंगिक हो जाता है।

श्रीमुई के उपन्यास 'कट' की ओर मेरा ध्यान इसलिए गया क्योंकि यह एक दूरदर्शी रंगमंच कलाकार अमिताभ कुलशेष्ठ के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन पर मरणोपरांत एक नजर डालता है, चाहे उनके जीवन की उथल–पुथल हो या अपनी आवाज़ सुनाने के लिए चुकाई गई कीमत। कैसे अमिताभ एक अजीब तरह के खोखलेपन के बीच फड़फड़ा रहे थे – जिस बुनियादी मानवीयता, पारदर्शिता, देश की **कानून व्यवस्था**, सद्गुणों और संस्थानों के लिए वह जीवन भर खड़े रहे–उनके प्रति उनका अविश्वास बढ़ रहा था। वह सोच जो उथली जातिवादी और **सांप्रदायिक** राजनीति को बढ़ावा दे रही थी, जिसके खिलाफ उन्होंने जीवन भर **संघर्ष** किया था, जिसे पल–पल दुकराया था, वही अब हर जगह उनका पीछा कर रही थी। इन सब बातों के परे यह उपन्यास काफी हद तक अमिताभ और उनके सह–कलाकारों व परिवारिक सदस्यों के आपसी संबंधों की पड़ताल भी करता है।

डिवासिंग, जैसा कि हम जानते हैं, एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें छात्र विशेषज्ञों के साथ मिलकर एक प्रस्तुति विकसित करने के लिए सामूहिक तौर पर कार्य करते हैं। यह एक छोटे से कथासूत्र से शुरू होती है और कोई नहीं कह सकता कि उसकी अंतिम परिणति क्या होगी। हमने 'कट' की पूरी कहानी बताए बिना और यहां तक कि लेखक के नाम का खुलासा किए बिना छोटी–छोटी इकाईयों में छात्रों को उपन्यास की सामग्री पेश की ताकि छात्र पूरी आज़ादी के साथ अपनी–अपनी कल्पना का उपयोग कर सकें और उपन्यास की कथावस्तु के बोझ से मुक्त रहें। प्रक्रिया के पहले हिस्से के खत्म होने के बाद ही हमने छात्रों को 'कट' की छपी पुस्तक वितरित की। हमने छात्रों की इंप्रोवाइज़ेशन में से कुछ का चुनाव किया और उन्हें इस तरह बुना कि वह दर्शकों के लिए एक दृश्य–भाषा का निर्माण करे। ऐसा करने में कई चुनौतियां और जोखिम हैं– शायद कहानी रैखिक न रहे, वह दृश्यों का कोलाज भर बन जाए; और तो और इसमें हमें एक बारगी कोई प्रत्यक्ष राजनीति भी नहीं दिखी कि हम क्या बना रहे हैं। हालांकि मैं कहना चाहता हूँ कि जहाँ सामूहिक कार्य–व्यापार है, वहाँ हमेशा एक सामूहिक राजनीति भी होती है। 'सामूहिक कार्य–व्यापार' का आशय मैं यहाँ कलाकारों के एक समूह द्वारा किए गए कार्यों के रूप में कर रहा हूँ, जिनका सामूहिक लक्ष्य अपनी समझ बढ़ाना और एक समान उद्देश्य प्राप्त करना है। जैसा कि उपन्यास रंगमंच और फिल्मों के उपाख्यानों पर आधारित है, और इन क्षेत्रों में काम करने वाले पात्रों के आपसी रिश्तों और व्यक्तियों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है, इसलिए रिश्तों और व्यक्तियों की राजनीति इस प्रस्तुति का मूल आधार बनाती है।

नाटक की डिवासिंग के दौरान हमने लगातार यह कोशिश की कि सभी अभ्यासों और आशुरचनाओं में एक डिजिटल हस्तक्षेप या इंटरफेस हो। डिजिटल हस्तक्षेप इस नाट्य प्रस्तुति निर्माण के दौरान एक आप्लावित भाषा प्रदान करने लिए किया गया और यह जानने के लिए कि रंगमंच में समय और स्थान का आर कैसे चुनौती दी जा सकती है। **डिजिटल थिएटर** का डिज़ाइन और प्रदर्शन दर्शकों के लिए कलाकारों के संपर्क में आने और नाट्य निर्माण में भाग लेने का मौका प्रदान करते हैं।

हम मंच पर उपन्यास के मुख्य पात्र अमिताभ कुलशेष्ठ की शारीरिक अनुपस्थिति को चुनौती के रूप में लेना चाहते थे ताकि यह लगे कि वह इस देश का ऐसा कोई भी रंगकर्मी हो सकता है जो मौजूदा व्यवस्था के खिलाफ आवाज़ उठाता हो। हमने एक चरित्र की भूमिका को दो अभिनेता/अभिनेत्रियों के दल में बांटने की कोशिश की है– एक अमिताभ की मृत्यु से पहले और दूसरा अमिताभ की मृत्यु के बाद। यह सोच इसलिए आई क्योंकि यह किताब विभिन्न चरित्रों के सस्मरणों और विचारों से गुजरती है जिसे **श्रीमुई** ने अपने उपन्यास में खूबसूरती से पिरोया है। हमारे छात्रों ने भी अलग–अलग व्यक्तियों के अनुसार चरित्र विकसित किए हैं।

मैं, यहाँ हरीश खन्ना का विशेष उल्लेख करना चाहता हूँ जिन्होंने मुंबई में व्यस्त होने और मुख्यधारा की कुछ बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग रद्द कर युवा छात्रों के साथ संवाद बनाए रखने की पहल की और शुरू से ही नाटक के निर्देशन/डिवाईसिंग के प्रति समर्पित रहे। रंगमंच और रचनात्मकता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिए मैं हृदय से धन्यवाद करता हूँ। प्रस्तुति निर्माण के लिए बहुमूल्य सुझाव व मार्गदर्शन हेतु मैं अदिती बिस्वास का भी समान रूप से आभारी हूं। मैं हिमांशु बी जोशी व विशाला रामचंद्र महाले का आभारी हूँ, जो इस उपन्यास का बेहतर रंगमंचीय रूपांतरण विकसित करने के लिए सतत संघर्षरत रहे। मैं युवा उभरते नाट्य निर्देशक सौरव पोद्दार की तहेदिल से सराहना करता हूँ जिन्होंने कल्पनाशील विचारों के साथ प्रस्तुति निर्माण में अपना योगदान दिया। अंत में, मैं तृतीय वर्ष के मेहनती और प्रिय छात्रों का आभारी हूं, जिनके बिना यह परियोजना शायद कभी संभव नहीं हो पाती।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
BAHAWALPUR HOUSE, BHAGWANDAS ROAD
NEW DELHI - 110001

"मी जिवंत आहे"

Says Folk Artist in his performance

Dr. Abhilash Pillai is a play director, pedagogue, and scholar of contemporary Indian Theatre, who has directed more than 30 productions. He has directed plays in various Indian languages and English; has contributed articles on theatre in leading publications in India and the U.K; and has attended seminars and conducted workshops. He has also authored a book on C.N. Sreekantan Nair – Vision and Mission of a Theatre Activist –published by Central Sahitya Akademi. His works draw on a wide array of materials but are presented in a contemporary aesthetic style. He has been involved in several collaborations, international and national, and initiated the first-ever collaboration between NSD and the Grand Circus, Kerala, culminating in a production, **Clowns & Clouds** which he was the artistic director. Among many other awards, he has received the prestigious National Sanskriti Award 2002-03 (National Cultural Award) for achievements in theatre, and Kerala Sangeetha Nataka Award for theatre direction in 2012.

भारतीय समकालीन रंगमंच के जाने माने निर्देशक, शिक्षाविद व स्कॉलर डॉ. अभिलाष पिल्लई विभिन्न भारतीय भाषाओं व अंग्रेजी में कई नाटकों का निर्देशन कर चुके हैं। आपने भारत और इंग्लैंड के प्रमुख प्रकाशनों में लेख लिखे हैं, सेमिनार व कार्यशालाओं में हिस्सा लिया है और कई विश्वविद्यालयों के अतिथि संकाय सदस्य रहे हैं। आपके कार्यों में शास्त्रीय से लेकर आधुनिक तक हर प्रकार की सामग्री शामिल रहती है परन्तु सभी को एक समकालीन–दर्शपरक शैली में प्रस्तुत किया गया है। आपकी प्रमुख प्रस्तुतियों में सवाल (ब्रिटेन), **साकाम** (जापान), अ, ऑफ ब्लड (जर्मनी, जापान) व मिडनाइट विल्डन (भारत, जर्मनी), ज़रा बड़ा एक बशीर, विविध–अ पर्पल हाइकू, अयुदायुं व लेटिम इप्सम शामिल हैं। आप जिन अंतर–सहयोगी प्रस्तुतियों के निर्देशक रहे हैं उनमें प्रमुख हैं– भारत में एक कोरियाई अभिनेता और बीजिंग में एक चीनी अभिनेता के साथ कर्ण शीर्षक से महाभारत का उपाख्यान, मास्को में रूसी अभिनेताओं के साथ शास्त्रीय संस्कृत नाटक शकुंतला, और रानावि व केरल के ग्रैंड सर्कस के बीच पहले पहल सहयोग से निर्मित क्लाउड्स एंड क्लाउन्स। आपकी हाल की प्रस्तुति पीयर गिंट हैदराबाद में हुए इब्सन समारोह के पीयर गिंट चक्र में प्रदर्शित की गई।

आपने सीएन श्रीकंठन नायर–अ विजन एंड मिशन ऑफ अ थिएटर एक्टीविस्ट नामक जीवनी लिखी है जिसका प्रकाशन केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा किया गया है। 2008–2011 तक आप रानावि के संकायाध्यक्ष भी रहे। डा. पिल्लई को रंगमंच के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए संस्कृति पुरस्कार, केरल संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, वायला वासुदेवन पिल्लई पुरस्कार और आशीर्वाद रंगमंडल सम्मान (बिहार) से सम्मानित किया गया है।

- Dr. Abhilash Pillai
Director of the play **'Blindside'**

'Now or Never'

I have no reason to lie

हरीश खन्ना अभिनय विशेषज्ञता के साथ 1993 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक हरीश खन्ना ने 1999 में चार्ल्स वैलेस इंडिया ट्रस्ट पुरस्कार के तहत लदन के रॉइल स्कूल ऑफ स्पीच एंड ड्रामा से एमए परफॉर्मेंस स्टडीज़ व वॉइस स्टडीज में सर्टिफिकेट कोर्स किया है।

अपनी प्रस्तुतियों के साथ व्यापक भ्रमण करने वाले हरीश खन्ना रानावि के दसवें भारत रंग महोत्सव में हुई ग्लास हाउस परियोजना के तहत 360 घंटे अनवरत एक ग्लास हाउस में लिव–इन–परफॉरमेंस के लिए ख्यात हैं। बाद में आपने गार्बेज प्रोजेक्ट (13वां भारत रंग महोत्सव, 2011) तथा सर्वाइवल प्रोजेक्ट (वियनेर फैस्टवोल्न, वियना, आस्ट्रिया 2011) का निर्देशन भी किया। आप कई बॉलीवुड व अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं। फिल्मों और नाटकों में की गई आपकी भूमिकाओं को सराहना मिली है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय व भारतीय रंगमंच विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय में अतिथि संकाय सदस्य हरीश देश–विदेश में आवाज़, संभाषण और अभिनय पर कार्यशालाओं का संचालन करते रहे हैं। इसके चलते आप राजीव गांधी फाउंडेशन के सहयोग से जम्मू कश्मीर में आयोजित होने वाली थिएटर थेरेपी कार्यक्रम का हिस्सा रहे हैं।

Harish Khanna, a graduate of National School of Drama with specialization in acting in 1993 ,Harish Khanna received the Charles Wallace India Trust Award in the year 1999 and completed a certificate course in MA Performance Studies and voice Studies from Central School of Speech & Drama, London.

Widely travelled with his performances in India and abroad , Harish is also known for his live-in-performance for non-stop **360** hours in a glass house under Glass House Project in 10th BRM, 2008. He further directed **Garbage PrOject** in 2011 for 13th BRM organized by the National School of Drama and premiered his survival project in Vienna Wiener Festwochen 2011. He has acted in number of **BollywOOd** and international films. His roles in theatre and films got critical acclaim. A visiting faculty at NSD, Indian theatre Department, Harish conducts workshops on Voice, Speech and Acting in India and abroad and been associated with Rajeev Gandhi Foundation for theatre the therapy programmes in J & K.

- Harish Khanna
Associate Director & Acting Guide

'My Choice'

I pushed one of the **windows** open

Sreemoyee Piu Kundu is an acclaimed journalist and columnist on gender and sexuality. She wrote Faraway Music , her first novel, in 2013, followed by her bestselling feminist erotica, Sitas's Curse, which explored female desire through the eyes of a Gujarati housewife. You've Got the wrong Girl, her third work of fiction , a light-hearted rom-com, broke new ground in Indian 'lad-lit'. In 2017, she wrote her first non-fiction work, the widely-appreciated and critically acclaimed Status Single, a narrative drawing from the lives of 3000 urban Indian single women, about the daily struggle of being single in a country where the highest validation for women remains marriage and motherhood. Sreemoyee is the recipient of the NDTV **L'Oreal Women** of Worth award for Excellence in Literature. She has been signed up for her memoirs, Bad Blood, by Bloomsbury and has just completed an inter-generational [illegible] Kolkata, All [illegible]

और लैंगिकता पर लिखने वाली बहु प्रशंसित पत्रकार और स्तंभकार श्रीमोई पियु कुंडु ने अपना पहला उपन्यास 'फारवे म्यूज़िक' 2013 में लिखा था। उसके बाद आपकी बेस्टसेलिंग नारीवादी इरोटिका 'सीताज़ कर्स' आई जिसमें आपने एक गुजराती स्त्री की नज़रों से स्त्री इच्छाओं की पड़ताल की। तत्पश्चात 'यू हैव गॉट द रॉंग गर्ल' आया जो एक हल्का–फुल्का रोम–कॉम था जिसने भारतीय (बाल साहित्य) 'लैड–लिटरेचर' की नई ज़मीन तोड़ी। 2017 में आपने पहला गैर–साहित्यिक काम 'स्टेटस सिंगल' लिखा जिसे व्यापक तौर पर सराहना और समीक्षकों की प्रशंसा मिली। यह 3000 शहरी भारतीय एकल महिलाओं के जीवन में एकल होने के दैनिक संघर्ष के बारे में है जो ऐसे देश में रहती हैं जहाँ महिलाओं के लिए विवाह और मातृत्व ही सबसे मान्य है। श्रीमोई को साहित्य में उत्कृष्टता के लिए एनडीटीवी लोरियल वुमन ऑफ वर्थ पुरस्कार प्रदान किया गया है। अभी हाल ही में ब्लूम्सबरी प्रकाशन संस्थान द्वारा आपको अपने संस्मरण 'बैड ब्लड' के लिए साइन किया गया है। आपने कोलकाता आवास पर 'ऑल अवर अदर लाइज़' नामक एक अंतर–पीढ़ीगत पारिवारिक गाथा को पूरा किया है।

- Sreemoyee Piu Kundu
Author Of The Novel **'Cut'**

"The question of **morality** often plagued me"

Aditee Biswas an Erasmus Mundus Scholar and a MA in International Performance Research from the University of Warwick and Universitiet van Amsterdam, Aditee Biswas completed her master's in Theatre techniques and Design from the National School of Drama (NSD) in 2004.

Having associated with and designed for many eminent theatre directors from India and abroad, Aditee creates interdisciplinary, intercultural, dance/movement based work, largely dealing with the themes of gender, identity and politics of the body. She started directing theatre pieces such as Portrait of Dora, Untitled and Bali as well as collaborative dance theatre pieces such as In/Out/In and Unfinished.

In 2015, she instituted the Ilhaam Collective partnering with another NSD graduate Priyanka Pathak aiming to provide a space for dialogue, collaboration and creation for the arts. Ilhaam's first theatre production "V2" (Square-root Two) featured at the Contemporary Arts Week, New Delhi and at the Rangashankara Theatre Festival, Bangalore in 2015. In January, 2016, she directed "Close" a performance based on Harold Pinter 'Betrayal' and 'The Dumb Waiter' as student's production at the Flame School of Fine & Performing Arts, Pune. Later she directed her first TYA ('Theatre for Young Audience) play "86000 Sekendalu" in Kannada written by Martin Baltschiet and produced by the Ranga Shankara Repertory Company and 'S/he' first TYA production for Ilhaam Collective's.

A recipient of Sangeet Natak Akademi's Bismillah Khan Yuva Puraskar, 2012 for her work in the field of Theatre Direction, Aditee teaches several leading educational institutions and universities in India, including National School of Drama, Jamia Milia University, Lady Shri Ram College and FLAME University, Pune. Presently she is the faculty at the The British School, New Delhi at the IB and IGCSE level.

- Aditee Biswas
Guide & Adviser

इरासमस मुंडस स्कॉलर एवं वॉर्विक विश्वविद्यालय और यूनिवर्सिटि वेन एम्स्टर्डम से इंटरनेशनल परफॉर्मेंस रिसर्च में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त अदिती बिस्वास ने 2004 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से रंग तकनीक व परिकल्पना में विशेषज्ञता प्राप्त की।

आप भारत और विदेश के कई जाने–माने रंग निर्देशकों की प्रस्तुतियों की परिकल्पना कर चुकीं हैं। आपका रुझान अधिकांशतः अंतर–विषयी, अंतर–सांस्कृतिक नृत्य/गति आधारित कार्य की तरफ है, जो मुख्य रूप से लिंग, पहचान और देह की राजनीति से संबंधित है। आपने 'पोर्ट्रेट ऑफ डोरा', 'अनटाइटल' और 'बलि' रंग प्रस्तुतियों के साथ–साथ 'इन/आउट/इन' और 'अनफिनिश्ड' जैसे सहयोगी नृत्य–रंगमंच प्रस्तुतियों के साथ अपने निर्देशन का सफर शुरू किया।

2015 में आपने एक अन्य रानावि स्नातक प्रियंका पाठक के साथ मिलकर इल्हाम कलेक्टिव की स्थापना की, जिसके तहत कला के लिए संवाद, सहयोग और प्रस्तुति निर्माण के लिए एक स्पेस प्रदान करना था। इल्हाम की पहली रंग प्रस्तुति 'V2' (स्क्वायर–रूट टू) नई दिल्ली में हुए कंटेम्परेरी आर्ट वीक और 2015 में बैंगलोर के रंगशंकरा थिएटर फेस्टिवल में प्रदर्शित हुई। जनवरी 2016 में पूना के फ्लेम स्कूल ऑफ फाइन एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स की छात्र प्रस्तुति के तौर पर आपने हेरोल्ड पिंटर के 'बिट्रेयल' और 'द डम्ब वेटर' पर आधारित 'क्लोज़' का निर्देशन किया। आपने युवा दर्शकों के लिए अपनी पहली रंग प्रस्तुति (थिएटर फॉर यंग ऑडिएंस) के तौर पर मार्टिन बाल्चायट लिखित '86000 सेकेन्डालु' नाटक रंगशंकरा रंगमंडल के तहत कन्नड़ भाषा में और और फिर इल्हाम कलेक्टिव के लिए युवा दर्शकों की रंग प्रस्तुति 'शी/हीं' का निर्देशन किया।

रंगमंच निर्देशन के क्षेत्र में विशेष कार्य हेतु संगीत नाटक अकादमी के बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार–2012 से सम्मानित अदिती भारत के जिन प्रमुख शैक्षिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाती रही हैं, उनमें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय, लेडी श्रीराम कॉलेज और फ्लेम यूनिवर्सिटी, पुणे शामिल [illegible] वर्तमान में [illegible] द ब्रिटिश स्कूल, नई दिल्ली [illegible] आई बी आईजीसीएसई स्तर की सं[illegible] है।

"Well known Indian Theatre Director Amitabh Kulasheshta Passes away"

Started 25 years ago as a costume designer, Kriti v Sharma worked with major national and international theatre companies as well as directors. She was awarded by the **Chamanal memorial** award-2013 for outstanding contribution in the field of costume design for more than 17 years , Kriti has successfully balanced work in the field of applied theatre using drama as a therapy and **psychodrama** specialised workshops dealing with a range of issues from self image and sexuality , education for parents, educators, teenagers, and children. In 2009, she started her own theatre company called the Theatre Collective that specializes in conducting theatre workshops for adults and children. The work of her company also focuses on workshops for institutions, corporate houses well as special areas like actor training.

A qualified IB and A level IGCSE teacher for drama, she has established drama departments at the British School, New Delhi and Lancer's International School, Gurgaon and served as a faculty. She is currently associated with Pathways World School, Noida. She is a visiting faculty at National School Of Drama and Sri Ram Centre for Performing Arts since 1996. She also works as consultant for curriculum and content development with various Educational consultancies focussing on the integration of drama into mainstream education and developing curriculum for drama as well as specialising in teacher training workshops in institutions across the country. Kriti has also worked as team director of documentaries for Surabhi India's First cultural magazine programme in Doordarshan.

- **Kriti V Sharma**
Costume Design Guide

"A WOMAN IS NEVER TAUGHT WHAT SHE SHOULD EXPECT FROM HER MARRIAGE"

रंगमंच में कृति वी शर्मा की यात्रा वेशभूषा परिकल्पक के तौर पर 25 वर्ष प्रारम्भ हुई थी। आपने प्रमुख राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय रंगमडलों में और अनेक भारतीय व विदेशी निर्देशकों के साथ काम किया है। वेशभूषा परिकल्पना में आपका असाधारण योगदान के लिए वर्ष 2013 आपको चमनलाल मेमोरियल पुरुस्कार से सम्मानित किया गया।

पिछले 17 सालों से आपने व्यवहारिक रंगमंच के क्षेत्र में कई कार्यशालाओं का संचालन द्वारा थेरेपी साइकोड्रामा तीन व्यावहारिक और स्व–छवि से लेकर अभिभावकों, शिक्षकों, किशोर– किशोरियों व बच्चों के लिए शिक्षा के मुद्दों पर कार्य करते हुए व्यावसायिक संतुलन साधा है। 2009 में आपने अपनी रंगमंच कंपनी द **थिएटर कलेक्टिव** की स्थापना की जो कि बच्चों और वयस्कों के लिए कार्यशाला आयोजित करने में विशेषज्ञता रखती है। इसके अलावा आपकी कंपनी का जोर संस्थानों, कॉरपोरेट संगठनों व अभिनेता प्रशिक्षण पर भी है।

आप एक प्रशिक्षित आईबी व प्रथम श्रेणी आईजीसीएसई नाट्य अध्यापिका हैं और दिल्ली के ब्रिटिश स्कूल व गुडगॉव के लांसर्स इंटरनेशनल स्कूल में रंगकला विभाग की स्थापना करने के अलावा उनमें संकाय सदस्य भी रही हैं। वर्तमान में आप पाथवेज़ वर्ल्ड स्कूल से जुडी हुई हैं। 1996 से ही आप रानावि व श्रीराम सेंटर में अतिथि संकाय हैं। आप विभिन्न शैक्षिक परामर्शदाता संस्थानों के लिए मुख्यधारा की शिक्षा में नाटक के समायोजन और नाट्य पाठ्यक्रम के विकास और देशभर के संस्थानों में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यशालाओं में विशेषज्ञता आधारित पाठ्यक्रम और पाठ विकास हेतु सलाहकार के रूप में भी कार्य करती रही हैं। कृति पूरदर्शन पर भारत की पहली सांस्कृतिक पत्रिका कार्यक्रम सुरभि के लिए वृत्तचित्र दल निर्देशक के तौर पर भी कार्य कर चुकी हैं।

- **Kriti V Sharma**
Costume Design Guide

"Feminine Fantasy Forbidden"

लेखक, परिकल्पक, निर्देशक हिमांशु बी जोशी पिछले 20 वर्षों से रानावि से जुड़े हुए हैं। रानावि के लिए मिडनाइट्स चिल्ड्रन का रूपान्तरण, ताजमहल का अनुवाद, रंगमंच–सर्कस प्रस्तुति क्लाउन्स एंड क्लाउड्स का सह–लेखन, मीता की कहानी व होली का विविध–ए पर्पल हाइवू नाम से पुनर्लेखन के अतिरिक्त रानावि रंगमंडल के लिए मेमसाब पृथ्वी, हिन्दी अकादेमी के लिए हाँ, मैं गीत बेचता हूँ, तथा बच्चों के लिए इक्कीसवीं सदी की दादी और मंगल ग्रह का रहस्य नाटकों का लेखन किया है। आपने जी. शंकर पिल्लई की खोज, ख्वाजा अहमद अब्बास के बंबई के फुटपाथ पर एक हजार रातें, शेक्सपियर के रोमियो और जूलियट व भीष्म साहनी के **हानूश** आदि नाटकों का निर्देशन भी किया है।

एक प्रकाश परिकल्पक के तौर पर आपने देश के कई महत्वपूर्ण निर्देशकों –कलाकारों के नाटकों की प्रकाश परिकल्पना की है। आपने अभिलाष पिल्लई निर्देषित **आइलैंड ऑफ ब्लड** तथा अभिनेता हरीश खन्ना के **ग्लास हाउस प्रोजेक्ट** की दृश्य परिकल्पना भी की है और भारत रंग महोत्सव, भारत में जर्मन महोत्सव, पूर्वा (महिला निर्देशकों का रंग–महोत्सव), डेज ऑफ रशियन कल्चर इन इंडिया के अलावा जापान फाउंडेशन, टोक्यो द्वारा प्रस्तुत **बाबरनामा** : **मैमोरीज ऑफ व लीजेंड** के तकनीकी समन्वयक रहे हैं। इसके अतिरिक्त आप लीला (दक्षिण एशियाई महिला रंग महोत्सव) के मुख्य तकनीकी समन्वयक व अंतरराष्ट्रीय रंग महोत्सव, केरल (आईटीएफओके) के महोत्सव समन्वयक भी रहे हैं। आपने कई प्रस्तुतियों के पोस्टर ब्रोशर भी डिजाइन किए हैं। भारत फाउंडेशन से स्नातक व स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त किये हुए दृश्य परिकल्पना व नाट्य विधा में 25 वर्षों से अनुभवी हैं। थिएटर कंसल्टेंसी सर्विस देश भर में प्रदान कर रहे हैं।

- **Himanshu B Joshi**
Dramaturgy &
Lighting Design Guide

Himanshu B Joshi, a [illegible], designer and director, Himanshu has been working with NSD for last 22 years. He has translated/adapted Salman Rushdie's **Midnight's Children** and Shama Futtehally's Tajmahal for NSD, written Memsaheb Prithvi for NSD Rep. Co. and Haan Mein Geet Bechta Hoon for Hindi Academy, co-written Clowns & Clouds- a confluence of theatre and circus for NSD, re-wrote Holi and A Friend's Story as **Vividh-a purple haiku** for NSD and written & directed Ikkiswin Sadi Ki Dadi and Mangal Griha ka Rahasya for children.

A noted lighting designer, Himanshu has designed lights for the plays by many eminent directors & artists. Besides designing Abhilash Pillai's Island of Blood and Harish Khanna's 'Glass House Project', he had been technical coordinator of Bharat Rang Mahotsava, German Festival in India, Poorva (Women Directors' Theatre Festival), Days of Russian Culture in India and India shows of Memories of a Legend produced by Japan Foundation, Tokyo. He was the Chief Technical Coordinator for Leela (South Asian Women's Theatre Festival) and Festival Coordinator for International Theatre Festival of Kerala (ITFoK). He also designed poster brochure for many performances. A recipient of Junior and Senior fellowships on [illegible] from Govt. of India, Himanshu has been teaching lighting, playwriting and space designing as well as providing theatre consultancy services across the country.

"The world around us is changing; the war will be bigger and more dangerous"

Vishala Ramachandra Mahale, graduated from National school of Drama, New Delhi, with specialization in Theatre Technique and Design in the year 2014. As an artist working in multi- disciplinary, **multilingual** set up, he has worked / collaborated with various groups of performance makers, directors, visual artists and choreographers to create wide range of art works. At present he works as a freelance writer/**dramaturge**, content developer and designer.

विशाल रामचन्द्र महाले ने वर्ष 2014 में रंगमंच तकनीक व परिकल्पना में विशेषज्ञता के साथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली से स्नातक उपाधि प्राप्त की है। एक बहु– **अनुशासनात्मक**, बहुभाषी स्थापना में काम कर रहे कलाकार के तौर पर आपने विभिन्न संस्थाओं, प्रस्तुति निर्माताओं, निर्देशकों, दृश्य कलाकारों व नृत्य संयोजकों के साथ कला कार्यों की विस्तृत श्रृंखला बनाने के लिए कार्य या सहयोग किया है। वर्तमान में आप एक स्वतंत्र लेखक, कंटेंट डेवलपर व परिकल्पक के तौर पर कार्य कर रहे हैं।

- **Vishala R Mahale**
Dramaturgy &
Poster-Brochure Guide

Sourav Poddar, an alumnus of National School of Drama, New Delhi, with specialization in Theatre Techniques and Design in the year 2014. He is currently engaged with the collaborative platform of the visual artists named **'Spellingzmistake'**. As the initiating team member, he is currently exploring performance making & the **digital** part in live **performances**. His area of interest includes the possibilities of exploring the space in various media, creating spatial elements and scenography in real space. Sourav has been extensively working with renowned artists around the country.

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के पूर्व छात्र सौरव पोद्दार ने वर्ष 2014 में रंगमंच तकनीक और परिकल्पना में विशेषज्ञता हासिल की। आप वर्तमान में दृश्य कलाकारों के सहयोगी मंच 'स्पेलिंग्जमिस्टेंक' से जुड़े हुए हैं। शुरुआती टीम के सदस्य के तौर पर आप वर्तमान में प्रस्तुति निर्माण व लाइव प्रदर्शनों में डिजिटल हिस्सेदारी की संभावना का अन्वेषण कर रहे हैं। आपके रुचि के क्षेत्रों में **विभिन्न माध्यमों** में स्पेस की खोज की संभावना तथा वास्तविक स्थानों में स्थानिक तत्वों व दृश्यों की रचना शामिल है। सीरव देश भर के प्रसिद्ध कलाकारों के साथ लगातार कार्य कर रहे हैं।

- **Sourav Poddar**
Assistant Director&
Stylist/Makeup/Design Guide

"A Digital Devised Performance"

ON STAGE

Abhilasha Balu Poul :	Sarla Kulasheshtra
Aditi Arora :	Maya Shirale
Aditi Arya :	Mallika Singh (RK's Lawyer)
Anmol Ghuliani :	Kathak Dancer, Dr. Pastakia, Doctor at Morgue
Ashlesha Parsuram :	Manju Bhabhi, Sarala's Mother, ED Officer
Ashwini Makrand Joshi :	Razia Siddiqui
Bhumisuta Das :	Marie Bourdaine
Diksha Tiwari :	Anupama Apte, Opera Singer, ED Officer
Hari Shankar Ravi :	Dada Saheb Sarat Chandra Joglekar, Sanju, ED Officer
Jitu Rabha :	Bihari Boy, Oppressed Men, Young Avik Dasgupta, Studio Owner, Amol Rawat
Manoj Kumar Thapar :	Shirish Kulkarni, Ballav Salve, Tyeb Ansari, Voice of Amitabh Kulasheshtra, Sultan, Vinod
Mridul Chawla :	Govind Deval, Maya's Father, Prateik Master
Pallav Singh :	Marathi Man, Oppressed Men, Rakesh Chopra (RK), Narayan Rao Ghorpade
Salim Husen Mulla :	Dada Saheb Sarat Chandra Joglekar, Sanju, ED Officer
Sayan Sarkar :	Young Rakesh Chopra (RK), Amitabh's Father, Jayant Salve, Sanjeev
Shruti :	Rk's Assistant
Snehalata Siddhartha Tagde :	Marathi Women, Razia Siddiqui, Maina (neighbour girl)
Snigdha Mondal :	Young Sarla Kulasheshtra
Som :	Marathi Man, Avik Dasgupta
Suman Purty :	Young Mrinalini / Maya Shirale
Yashaswini R. :	Seema (Amitabh's Lawyer), Meena Tai, Ed Officer, Mumtaz (Amitabh's Mother)

OFF STAGE

Dramaturgy :	Himanshu B Joshi, Vishala R Mahale
Dramaturgy Team :	Abhilasha B Poul, Manoj K Thapar, Pallav Singh, Saleem Husen Mulla, Saras Kumar Namdeo, Sejuti Bagchi, Shruti, Suman Purty
Set Consultant:	Amarjeet Sharma
Translation :	Himanshu B Joshi & Students
Set Design Guidance :	Abhilash Pillai
Set Design :	Sejuti Bagchi, Hari Shankar Ravi
Digital Virtual Design Guidance :	Sourav Poddar
Digital Virtual Design :	Balasubramanian G, Shruti
Public Relation :	Petrishia Melodi Dorcas
Lighting Design Guidance :	Himanshu B Joshi
Lighting Design :	Sarthak Narula, Harishankar Ravi
Costume Design Guidance :	Kriti V Sharma
Costume Design :	Mayengbam Sunil Singh
Asst. in Costume :	Papori Mahanta, Pushpa
Make-up Guidance :	Kriti V Sharma
Make-up Team :	Shagufta Bano (Babbu Khan), Akhlaq Salmani, Amit Arya,
Hair Stylists :	Ritu Adhikari
Sound Design & Music Guidance:	Santhosh Kumar Singh 'Sandy'
Lyrics :	Pallav Singh, Salim Husen Mulla
Song Composition :	Devendra Ahirwar (Maare Jaayenge), Manoj K Thapar & Sayan Sarkar
Singers :	Manoj, Sayan, Diksha, Sneha, Shruti, Salim
Tabla, Naal, Percussion :	Dheeraj Kumar
Sound Execution :	Saras Kumar Namdeo
Hand Properties :	Jitu Rabha
Stage Manager :	Sarthak Narula
Poster-Brochure Design Guidance:	Vishala R Mahale
Poster& Brochure Design :	Petrishia Melodi Dorcas
Choreography Guidance :	Naresh Kumar
Asst. in Choreograph :	Veena Jog
Choreography :	Bhumisuta Das, Snehalata Siddhartha Tagde
Guidance & Adviser :	Aditee Biswas
Assistant Director :	Sourav Poddar
Author of novel 'CUT':	**Sreemoyee Piu Kundu**
Associate Director & Acting Guide :	**Harish Khanna**
Design & Direction :	**Abhilash Pillai**

PRODUCTION TEAM

Production Manager :	Parag Sarmah
Production Coordinator :	Satish Gautam
Assistant Production Manger :	Utpal kumar Jha
Assistant Stage Manager :	Neetu Vaid

Production Department
Accounts Department
Set & Carpentry
Costumes
Lights
Sound & Video Projection
Photography & Video Documentation
Property
Library
Bookshop
Production Boy
CEP Office Staff
Student Mess & Canteen Staff

SPECIAL THANKS TO
Rajesh Joshi
Narayan Surve
Nihal Kardam
Asha Sumesh
Surender Singh

ACKNOWLEDGEMENTS
Jilmil Hajarika
Dr. Anuradha Kapur
Kirti Jain
Anamika Haksar
Maya Krishna Rao
D R Ankur
Ram Gopal Bajaj
Sarada Pillai
S.R.K Pillai

"I was chosen to play the role of Sakuntala"

Trained in contemporary Indian dance under the legendry dancer choreographer Narendra Sharma, Naresh Kumar worked for more than 13 years as a senior ballet master and leading dancer in his guru's centre Bhumika. He further participated in a three week long dance workshop conducted by the faculty members of American Dance Festival (ADF) organized by the Sangeet Natak Academy and ICCR in1990.

Starting independent choreographic works in 1992, Naresh has performed thrice in Yuva Mahotsava, Qutub Festivals, and Uday Shankar Festivals organized by the Sahitya Kala Parishad in Delhi. He has also participated in the Uday Shankar Festival organized by Sangeet Natak Akademi in Kolkata. Assisted leading theatre director Bhanu Bharati for Bharat Utsav and choreographed and performed in Ant-Anant, a play produced by National School of Drama Repertory Company and directed by Abhilash Pillai

In January 2010, his team performed in Vietnam on an invitation from ICCR and sponsorship from ministry of culture, Govt. Of India . Presently, Naresh is associated with Delhi Public School as a Dance Instructor and conducts master classes on body movement at several theatre institutions of India.

समसामयिक नृत्य में प्रशिक्षित नरेश ने अपने गुरु द्वारा चलाई जा रही संस्था भूमिका में एक बैले मास्टर व मुख्य नृतक के तौर पर लगभग 13 वर्षों तक कार्य किया। आपने 1990 में संगीत नाटक अकादेमी द्वारा आयोजित व अमेरिकन डांस फेस्टीवल के सदस्यों द्वारा संचालित तीन सप्ताह की गहन कार्यशाला में भाग लिया और एक स्वतंत्र नृत्य संरचनाकार के रूप में 1992 में कार्य प्रारम्भ किया। साहित्य कला परिषद के युवा महोत्सव, कुतुब महोत्सव तथा उदयशंकर समारोह में तीन बार अपनी कला का प्रदर्शन किया। संगीत नाटक अकादेमी द्वारा कोलकाता में हुए उदयशंकर समारोह में भी आपने भाग लिया। भारत उत्सव के लिए जाने माने निर्देशक भानु भारती के सहयोगी रहे नरेश अभिलाष पिल्लई निर्देशित [illegible] रंगमंडल की प्रस्तुति [illegible] संरचना व अभिनय की [illegible] आपके समूह ने वियतनाम में [illegible] द्वारा आयोजित व संस्कृति मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित कार्यक्रम [illegible] वर्तमान में आप एक नृत्य [illegible] पर दिल्ली पब्लिक स्कूल [illegible] विभिन्न संस्थानों में [illegible] विशेष कक्षाएं लेते हैं।

- **Naresh Kumar**
Choreography Guide

"No decent boy will want an actress for a wife!!!"

संतोष कुमार सिंह 'संडी' समकालीन भारतीय संगीत, प्रदर्शन कला और नवीन मीडिया क्षेत्र में एक प्रसिद्ध संगीतकार और ध्वनि परिकल्पक हैं। तीन सौ से अधिक मंच प्रस्तुतियों, 80 टेलिविज़न धारावाहिकों, 50 वृत्तचित्र, 120 एलबम, 35 प्रमुख फिल्मों के साथ आप संगीत उत्पादन क्षेत्र में एक अग्रणी नाम हैं। भारत भर और विदेशों में 40 से अधिक बैंड व कॉयर का हिस्सा रहे हैं और विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के साथ जुड़कर विशेष रूप से काम करते रहे हैं। वर्तमान में आप अपनी साउंड डिज़ाइन कंपनी साउंड प्रो–1 के साथ व्यस्त हैं।

Santosh Kumar Singh 'Sandy' is a well known music composer and sound designer in the field of contemporary Indian music, performing arts and new media. With more than 3 hyndred stage productions , 80 television serials, 50 documentaries , 120 albums, 35 major film productions , he is a well known name in the field of music production. He has also been part of more than 40 band start ups choir throughout India and abroad. Working with various NGO's, He has been actively involved in working with street children's of the National Capital Region of Delhi. As for now, he is busy with assignments for his sound design company SOUNDPRO1.

- **Santhosh Kumar Singh 'Sandy'**
Sound Design &
Music Guide

"Its my last chance and yours as well"